

आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की अनिवार्यता और अनुसंधान पद्धति का अध्ययन

सुरेश चंद्र राठौड़, शोध छात्र, शिक्षा विभाग, ओपीजेएस विश्वविद्यालय, चुरू (राजस्थान)

सारांश

शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि उनके अध्ययन-अनुभव, अवसरों, चुनौतियों और शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित कर सकती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं, अनिवार्यताओं तथा अनुसंधान पद्धति के संदर्भ में उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न सामाजिक वर्गों से संबंधित विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में किस प्रकार की शैक्षिक, आर्थिक, संस्थागत और संसाधन संबंधी आवश्यकताओं का सामना करना पड़ता है। अनुसंधान पद्धति के अंतर्गत वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया जा सकता है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा अवलोकन जैसी प्रविधियों को उपयोगी माना गया है, जबकि द्वितीयक आँकड़ों पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों एवं संबंधित साहित्य से प्राप्त किए जा सकते हैं। अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि, अध्ययन संसाधनों की उपलब्धता, आर्थिक स्थिति, मार्गदर्शन, अनुसंधान के प्रति रुचि तथा संस्थागत सहयोग जैसे पक्षों को ध्यान में रखा गया है। अध्ययन का उद्देश्य किसी वर्ग को श्रेष्ठ या निम्न सिद्ध करना नहीं, बल्कि विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझना है। निष्कर्षों के आधार पर समान अवसर, समावेशी शिक्षा और प्रभावी अनुसंधान सहयोग के लिए सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

मुख्य शब्द: आरक्षित वर्ग, सामान्य वर्ग, विद्यार्थी, उच्च शिक्षा, अनुसंधान पद्धति, शैक्षिक आवश्यकताएँ, समान अवसर, समावेशी शिक्षा, सामाजिक पृष्ठभूमि, संस्थागत सहयोग।

